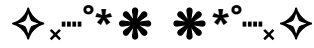




শ্রী রাম রক্ষা স্তোত্রম্

Rama Raksha Stotram
in bengali



॥ श्री राम रक्षा स्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्री रामरक्षा स्तोत्रमंत्रस्य
बुधकौशिक ऋषिः
श्री सीताराम चंद्रोदेवता
अनुष्टुप् छंदः
सीता शक्तिः
श्रीमद् हनुमान् कीलकम्
श्रीरामचंद्र प्रीत्यर्थे रामरक्षा स्तोत्रजपे विनियोगः ॥

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशर धनुषं बद्ध पद्मासनसुं
पीतं बासोवसानं नवकमल दलस्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम् ।
वामांकारात् सीतामुख कमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकार दीप्तं दधतमुरु जटामंडलं रामचंद्रम् ॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातक नाशनम् ॥ 1 ॥

ध्यात्वा नीलोत्पल श्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकी लक्ष्मणोपेतं जटामुकुट मंडितम् ॥ 2 ॥

सासितृण धनुर्बाण पाणिं नक्तं चरांतकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातु माविर्भूतमजं विभुम् ॥ 3 ॥

रामरक्षां पठेत्प्रज्ज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरा मे राघवः पातु फालं (भालं) दशरथात्तुजः ॥ 4 ॥

कौसल्येषो दृशौपातु विश्वामित्रप्रियः शृती ।
घ्राणं पातु मथत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥ 5 ॥

জিহ্বাং বিদ্যানিধিঃ পাতু কংঠং ভরতবংদিতঃ ।
ষ্কংধৌ দিব্যাযুধঃ পাতু ভুজৌ ভগ্নেশকার্মুকঃ ॥ 6 ॥

করৌ সীতাপতিঃ পাতু হৃদযং জামদগ্ন্যজিত্ ।
মধ্যং পাতু খরধ্বংসী নাভিঃ জাংবদাশ্রযঃ ॥ 7 ॥

সুগ্রীবেশঃ কটিং পাতু স্কথিনী হনুমত্-প্রভুঃ ।
ঊরু রঘুত্তমঃ পাতু রক্ষঃকুল বিনাশকৃৎ ॥ 8 ॥

জানুনী সেতুকৃৎ-পাতু জংঘে দশমুখাংতকঃ ।
পাদৌ বিভীষণশ্রীদঃ পাতু রামোহখিলং বপুঃ ॥ 9 ॥

এতাং রামবলোপেতাং রক্ষাং যঃ সুকৃতী পঠেৎ ।
স চিরাযুঃ সুখী পুত্রী বিজয়ী বিনয়ী ভবেৎ ॥ 10 ॥

পাতাল-ভূতল-ব্যোম-চারিণ-শচদ্ব-চারিণঃ ।
ন দ্রষ্টুমপি শক্তাস্তে রক্ষিতং রামনামভিঃ ॥ 11 ॥

রামেতি রামভদ্রেতি রামচংদ্রেতি বা স্মরন্ ।
নরো ন লিপ্যতে পাপৈর্ভুক্তিঃ মুক্তিং চ বিংদতি ॥ 12 ॥

জগজ্জৈত্রৈক মংত্রৈ রামনাম্নাভি রক্ষিতম্ ।
যঃ কংঠে ধারযেত্তস্য করস্থাঃ সর্বসিদ্ধযঃ ॥ 13 ॥

বজ্রপংজর নামেদং যো রামকবচং স্মরেৎ ।
অব্যাহতাজ্ঞঃ সর্বত্র লভতে জয়মংগলম্ ॥ 14 ॥

আদিষ্টবান্-যথা স্বপ্নে রামরক্ষামিমাং হরঃ ।
তথা লিখিতবান্-প্রাতঃ প্রবুদ্ধৌ বুধকৌশিকঃ ॥ 15 ॥

আরামঃ কল্পবৃক্ষাণাং বিরামঃ সকলাপদাম্ ।
অভিরাম-স্মিলোকানাং রামঃ শ্রীমান্ স নঃ প্রভুঃ ॥ 16 ॥

তরুণৌ রূপসংপনৌ সুকুমারৌ মহাবলৌ ।
পুংডরীক বিশালাক্ষৌ চীরকৃষ্ণাজিনাংবরৌ ॥ 17 ॥

ফলমূলাশিনৌ দাংতৌ তাপসৌ ব্রহ্মচারিণৌ ।
পুত্রৌ দশরথসৈ্যেতৌ ভ্রাতরৌ রামলক্ষ্মণৌ ॥ 18 ॥

শরণ্যৌ সর্বসত্ত্বানাং শ্রেষ্ঠৌ সর্বধনুশ্চতাম্ ।
রক্ষঃকুল নিহংতারৌ ত্রাযেতাং নো রঘুত্তমৌ ॥ 19 ॥

আতু সজ্য ধনুষা বিষুস্পৃশা বক্ষয়াশুগ নিষংগ সংগিনৌ ।
রক্ষণায় মম রামলক্ষণাবগ্রতঃ পথি সদৈব গচ্ছতাম্ ॥ 20 ॥

সন্নদ্ধঃ কবচী খড়্গী চাপবাণধরো যুবা ।
গচ্ছন্ মনোরথান্শচ (মনোরথোহস্মাকং) রামঃ পাতু স লক্ষ্মণঃ ॥ 21 ॥

রামো দাশরথি শশুরো লক্ষ্মণানুচরো বলী ।
কাকুত্‌সঃ পুরুষঃ পূর্ণঃ কৌসল্যেযো রঘুত্তমঃ ॥ 22 ॥

বেদাংতবেদ্যো যজ্ঞেশঃ পুরাণ পুরুষোত্তমঃ ।
জানকীবল্লভঃ শ্রীমানপ্রমেথ পরাক্রমঃ ॥ 23 ॥

ইত্যেতানি জপেন্নিত্যং মদুত্তমঃ শ্রদ্ধযান্বিতঃ ।
অশ্বমেধাধিকং পুণ্যং সংপ্রাপ্নোতি ন সংশযঃ ॥ 24 ॥

রামং দুর্বাদল শ্যামং পদ্মাক্ষং পীতবাসসম্ ।
স্তুবংতি নাভি-দিব্যৈ-র্নতে সংসারিণো নরাঃ ॥ 25 ॥

রামং লক্ষ্মণ পূর্বজং রঘুবরং সীতাপতিং সুন্দরম্
কাকুত্‌স্থং করুণার্ণবং গুণনিধিং বিপ্রপ্রিযং ধার্মিকম্ ।
রাজেংদ্রং সত্যসংধং দশরথতনয়ং শ্যামলং শান্তমূর্তিম্
বংদে লোকাভিরামং রঘুকুল তিলকং রাঘবং রাবণারিম্ ॥ 26 ॥

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ 27 ॥

श्रीराम राम रघुनंदन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥ 28 ॥

श्रीराम चंद्र चरणौ मनसा स्मरामि
श्रीराम चंद्र चरणौ वचसा गृह्णामि ।
श्रीराम चंद्र चरणौ शिरसा नमामि
श्रीराम चंद्र चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ 29 ॥

माता रामो मत्-पिता रामचंद्रः
स्वामी रामो मत्-सखा रामचंद्रः ।
सर्वस्वं मे रामचंद्रो दयालुः
नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥ 30 ॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च (तु) जनकात्तुजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनंदनम् ॥ 31 ॥

लोकाभिरामं रणरंगधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचंद्रं शरण्यं प्रपद्ये ॥ 32 ॥

मनोजवं मारुत तुल्य वेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्तुजं वानरयुथ मुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ 33 ॥

कूजंतं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्यकविता शाखां वन्दे बान्मीकि कोकिलम् ॥ 34 ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम् ।
लोकान्भिरामं श्रीरामं भूयोभूयो नमाम्यहम् ॥ 35 ॥

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसंपदाम् ।
तर्जनं यमदृतानां राम रामेति गर्जनम् ॥ 36 ॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥ 37 ॥

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥ 38 ॥

इति श्रीबुधकौशिकमुनि विरचितं श्रीराम रक्षास्तोत्रं संपूर्णम् ।

श्रीराम जयराम जयजयराम ।

✧.....°* *°.....✧

Free download PDF of all types of mantra, stotram, vandana, arati: chalisapdf.net